



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम..... *The Times of India* .....

दिनांक ३०.१२.२०२४... पृष्ठ संख्या..... ५ ..... कॉलम..... ४ .....

### HAU develops 2 new varieties of oat

Kumar Mukesh | TNN

**Hisar:** Scientists of the foder section, department of genetics and plant breeding, Chaudhary Charan Singh Haryana Agricultural University (HAU), have developed two new varieties of oats called OS 405 and OS 424. They claim that the new varieties are better than previous ones.

The new varieties have 10% higher yield than previous varieties and also have higher protein content, which will facilitate increased milk production in animals, they said. Besides, these varieties are said to be resistant to leaf scorching disease. So far, HAU scientists have developed nine varieties of oats.

These varieties have been notified and released in the meeting held in New Delhi by the "crop standards notification and approval central sub-committee" of the department of agriculture and cooperation, ministry of agriculture and farmers' welfare.

Among these varieties of oats, OS 405 has been recommended for the central region of India, mainly Maharashtra, Gujarat, Madhya Pradesh, Chhattisgarh and central UP while OS 424 is recommended for the hilly region comprising Himachal, Jammu and Kashmir and Uttarakhand.



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....पंजाब कैसरी

दिनांक ३०.१२.२०२० पृष्ठ संख्या.....३ .....कॉलम.....५-८ .....

### 'एच.ए.यू. वैज्ञानिकोंने एक साथ जई की 2 किस्में विकसित की'



जई की नई उन्नत किस्मों के फाइल फोटो।

हिसार, 29 दिसम्बर (ब्यूरो): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कृषि वैज्ञानिकों ने जई की एक साथ 2 नई व उन्नत किस्मों को विकसित की। ये किस्में ओ.एस. 405 व ओ.एस. 424 हैं, जिहें विश्वविद्यालय के अनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के चारा अनुभाग द्वारा विकसित किया गया है। विश्वविद्यालय द्वारा विकसित इस किस्म को भारत सरकार के कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के कृषि एवं सहकारिता विभाग की 'फसल मानक, अधिसूचना एवं अनुमोदन केंद्रीय उप-समिति' द्वारा नई दिल्ली में आयोजित बैठक में अधिसूचित व जारी कर दिया गया

है। बैठक की अध्यक्षता भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के फसल विज्ञान के उप-महानिदेशक डा. टी.आर. शर्मा ने की।

जई की इन किस्मों में ओ.एस. 405 को भारत के मध्य क्षेत्र मुख्यतः महाराष्ट्र, गुजरात, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़ और मध्य यू.पी. और ओ.एस. 424 को पहाड़ी क्षेत्र, जिसमें हिमाचल, जम्मू-कश्मीर व उत्तराखण्ड के लिए सिफारिश किया गया है।

हालांकि इस किस्म को विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने एच.ए.यू. में ही विकसित किया है। विश्वविद्यालय के कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता एवं आनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के विभागाध्यक्ष

रहा है। इसी प्रकार ओ.एस. 424 किस्म को विकसित करने में इस विभाग के चारा अनुभाग के वैज्ञानिकों डा. डी.एस. फौगाट, डा. योगेश जिंदल, डा. आर.एन. अरोड़ा, डा. एस.के. पाहुजा की टीम मेहनत रंग लाई है। इसके अलावा डा. एल.के. मिढ़ा, डा. एस.के. गांधी व डा. यू.एन. जोशी का भी विशेष सहयोग रहा है।

### अब तक जई की 9 किस्में विकसित कर चुका एच.ए.यू.: कुलपति



जई की उन्नत किस्म विकसित करने वाली टीम सदस्यों के साथ विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. समर सिंह।

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. समर सिंह ने कृषि वैज्ञानिकों द्वारा इस उपलब्धि पर बधाई दी और भविष्य में भी निरंतर प्रयासरत रहने का आह्वान किया। उन्होंने बताया कि इससे पहले भी विश्वविद्यालय के चारा अनुभाग के वैज्ञानिकों द्वारा विश्वविद्यालय की स्थापना से लेकर अब तक 9 किस्में विकसित की जा चुकी हैं, जो अपने आप में बड़ी उपलब्धि हैं।



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....  
दिनांक ३०/१२/२०२१ पृष्ठ संख्या..... ३ कॉलम..... १६

२०२१-२०२२

# जई की दो नई किस्में की विकसित, पहाड़ी क्षेत्रों में पशुओं को देगी पोषण



जई की उन्नत किस्म विकसित करने वाली टीम सदस्यों के साथ विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह। ■ पीटीआई

इन वैज्ञानिकों  
की मेहनत  
लाई रंग

कृषि महाविद्यालय के अधिदाता एवं आनुवाशिकी  
एवं पौध प्रजनन विभाग के विभागाध्यक्ष डा. एके  
छावड़ा ने बताया कि ओएस 405 किस्म को  
विकसित करने में इस विभाग के वारा अनुभाग के

विज्ञानियों डा. डीएस फोगट, डा. योगेश जिंदल,  
डा. आरएन अरोड़ा की टीम मेहनत रख लाई है।  
इसके अलावा डा. एसके गावी व  
डा. यूपूर्ज जोशी की भी विशेष सहयोग रहा है।

जगण संवाददाता, हिसार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कृषि विज्ञानियों ने जई की एक साथ दो नई व उन्नत किस्मों को विकसित किया है। जो पहाड़ी क्षेत्रों में पशुओं का पेट भरने के साथ पोषण का भी खाल रखेंगे। ये किस्में ओएस 405 व ओएस 424 हैं, जिन्हें विश्वविद्यालय के अनुवाशिकी पौध पोष प्रजनन विभाग के चारा अनुभाग द्वारा विकसित किया गया है। भारत सरकार के कृषि एवं कल्याण मंत्रालय के कृषि एवं सहकारिता विभाग ने इसके प्रयोग की अनुमति भी दे दी है। बैठक की अवधिकारी भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के फसल विज्ञान के उप-महानिदेशक डा. टीआर शर्मा ने की। जई की इन किस्मों में ओएस 405 को भारत के मध्य क्षेत्र मुख्यतः महाराष्ट्र, गुजरात, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़ और मध्य उत्तर प्रदेश और ओएस 424 को पहाड़ी क्षेत्र जिसमें हिमाचल व जम्मू-कश्मीर के लिए विकसित किया गया है, लेकिन कमेटी द्वारा इसकी प्रियारिश किया गया है। इस किस्म को गुणवत्ता व पैदावार को ध्यान में रखते

पहाड़ी क्षेत्र विकासमें हिमाचल, जम्मू-कश्मीर व उत्तराखण्ड के लिए विकासित किस्म की विकासित किया गया है। इस किस्म को विश्वविद्यालय के विज्ञानियों ने एचएस 405 किस्म में होरे चारे के अनुसंधान के अधिकारी व उत्पादकता अन्य किस्मों की तुलना में 10 प्रतिशत तक अधिक विकास किया गया है। इसी प्रकार उक्त है, जो पशु के दुग्ध उत्पादन में किस्मों की तुलना में सुखे चारे की बढ़ाती करती है। ये किस्में उत्पादन व पोषण की हाई से बहुत ही वेहतर है। उन्होंने बताया कि इस किस्म में

विश्वविद्यालय के अनुसंधान है। ओएस 405 किस्म में होरे चारे के विकासक डा. एसके सहायता ने लिए प्रसिद्ध किस्म कैट व ओएस 6 विकासक डा. एसके सहायता ने लिए प्रसिद्ध किस्म कैट व ओएस 114.73 विकेटल प्रति हेक्टेयर मिलती है। इससे लगभग 15.39 विकेटल विकेटल प्रति हेक्टेयर तक आकी गई है। ओएस 424 किस्म से 13.5 विकेटल प्रति हेक्टेयर तक बीज प्राप्त रोग के प्रति प्रतिरोधी हैं। इसी प्रकार

### प्रदेश के लिए सिफारिश का भेजेंगे प्रोजेक्ट

नई किस्म को विकसित करने वाली टीम सदस्य आनुवाशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के वारा अनुभाग के अध्यक्ष डीएस फोगट ने बताया कि हालांकि

इस किस्म को एश्यू में ही विकसित किया गया है, लेकिन कमेटी द्वारा इसकी

हूए अभी ओएस 405 को भारत के मध्य क्षेत्र मुख्यतः महाराष्ट्र, गुजरात, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़ और मध्य उत्तर प्रदेश और ओएस 424 को पहाड़ी क्षेत्र जिसमें हिमाचल व जम्मू-कश्मीर के लिए विकासित किया गया गया है। इस किस्म को गुणवत्ता व पैदावार को ध्यान में रखते

अब तक जई की 9 किस्में विकसित कर चुका है एचप्यू

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने कृषि विज्ञानियों द्वारा इस उपलब्धि पर बघाई दी और भविष्य में भी निरंतर प्रयासरर रहने का आह्वान किया। उन्होंने बताया कि इससे एहते भी विश्वविद्यालय के वारा अनुभाग के वैज्ञानिकों द्वारा विश्वविद्यालय की शृणाणा से लेकर अब तक नी किस्में विकसित की जा चुकी है।



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....जनज्ञाता  
दिनांक ३०.१२.२०२० पृष्ठ संख्या.....५ कॉलम...१.६

# उपलब्धि

## अनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के चारा अनुभाग का दावा- हरे चारे की उत्पादकता अन्य किस्मों से 10 प्रतिशत तक अधिक होगी

# हृष्टवि ने जई की दो किस्म की विकसित, मिलेगा अधिक चारा

अमर उजाला व्यूरो

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कृषि वैज्ञानिकों ने जई की एक साथ दो नई और उन्नत किस्मों को विकसित किया है। ये किस्में ओएस-405 व ओएस-424 हैं, जिन्हें विश्वविद्यालय के अनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के चारा अनुभाग द्वारा विकसित किया गया है।

इन किस्मों को भारत सरकार के द्वारा एवं किसान कल्याण मंत्रालय के द्वारा एवं सहकारिता विभाग की कफल मानक, अधिसूचना एवं अनुमोदन केंद्रीय उपसमिति द्वारा नई दिल्ली में आयोजित बैठक में अधिसूचित व जारी कर दिया गया है। इन किस्म की अध्यक्षता भारतीय कृषि

- ओएस 405 की भारत के मध्य क्षेत्र महाराष्ट्र, गुजरात, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़ और मध्य यूपी के लिए की गई सिफारिश
- ओएस 424 की पहाड़ी क्षेत्र हिमाचल, जम्मू-कश्मीर व उत्तराखण्ड के लिए की गई सिफारिश

के उपमहानिदेशक डॉ. टीआर शर्मा ने की। जई की इन किस्मों में ओएस-405 को भारत के मध्य क्षेत्र मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र, गुजरात, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़ और मध्य उत्तरप्रदेश तथा ओएस-424 को पहाड़ी क्षेत्र जिसमें हिमाचल, जम्मू-कश्मीर व उत्तराखण्ड के लिए सिफारिश किया गया गया है। इस किस्म को विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने एचपी में ही विकसित किया है। डॉ. डीएस फोगाट ने बताया



हृष्टवि द्वारा विकसित जई की नई किस्म ओएस-405। - अमर उजाला

### दोनों किस्में उत्पादन और पोषण की दृष्टि से बेहतर

इसी प्रकार ओएस-424 किस्म में हरे चारे की पैदावार 296.5 विकटल प्रति हेक्टेयर व सुखे चारे की पैदावार 65.1 विकटल प्रति हेक्टेयर तक आंकी गई है। ओएस-424 किस्म से लगभग 13.5 विकटल प्रति हेक्टेयर तक भी जीव प्राप्त किया जा सकता है। दोनों किस्में उत्पादन व पोषण की दृष्टि से बहतर है।

विभिन्न क्षेत्रों में परीक्षण के तौर पर इसलिए यहाँ किसानों के लिए भी लगाया गया था, जहाँ इसके बहुत ही इसकी सिफारिश सबंधी प्रयोजन

हरे चारे की उत्पादकता अन्य किस्मों से 10% तक अधिक होगी विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. एम्से सहायता ने बताया कि इन किस्मों में अन्य किस्मों की तुलना में प्रीटीन अधिक है, जो पाश के द्वारा उत्पादन में बढ़ावदारी करती है। ओएस-405 किस्म में हरे चारे के लिए प्रसिद्ध किस्म केट व ओएस 6 की तुलना में 10 प्रतिशत तक अधिक हरा चारा मिलता है। इसी प्रकार उक्त किस्मों की तुलना में सुखे चारे की पैदावार भी 11 प्रतिशत तक अधिक है। इन किस्मों में हरे चारे की उपज 513.94 विकटल प्रति हेक्टेयर व सुखे चारे की उपज 114.73 विकटल प्रति हेक्टेयर मिलती है। इससे लगभग 13.39 विकटल प्रति हेक्टेयर तक भी जीव प्राप्त किया जा सकता है। ये किस्में बता जूनसा रोग के प्रति प्रतिरोधी हैं।

### इन वैज्ञानिकों की मेहनत लाई रंग

विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा अनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के विभागध्यक्ष डॉ. एम्से छावड़ा ने बताया कि ओएस-405 किस्म को इस विभाग के द्वारा अनुभाग के वैज्ञानिकों डॉ. डीएस फोगाट, डॉ. योगेश विदल, डॉ. आरएन अरोड़ा, डॉ. योगेश विदल, डॉ. आरएन अरोड़ा, डॉ. एसके पाहुजा की टीम ने विकसित किया है। इसके अलावा डॉ. एलके मिद्दा, डॉ. एसके योगी व डॉ. योग



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....भैनी क. आर्कट.....

दिनांक ३०.१२.२०२० पृष्ठ संख्या.....?.....कॉलम.....6.....

एचएयू ने एक साथ जई  
की दो किस्म ओएस-405  
और 424 विकसित की

हिसार। चौधरी चरण सिंह  
हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय  
के वैज्ञानिकों ने जई की एक  
साथ दो नई उत्तर किस्मों को  
विकसित की है। ये किस्में  
ओएस 405 व ओएस 424  
हैं, जिन्हें विश्वविद्यालय के  
अनुबांशिकी एवं पौध प्रजनन  
विभाग के चारा अनुभाग ने  
विकसित किया है।

एचएयू द्वारा विकसित इस  
किस्म को भारत सरकार के कृषि  
एवं किसान कल्याण मंत्रालय के  
कृषि एवं सहकारिता विभाग की  
'फसल मानक, अधिसूचना एवं  
अनुमोदन केंद्रीय उप-समिति'  
की नई दिल्ली में हुई बैठक में  
अधिसूचित किया गया है। बैठक  
की अध्यक्षता भारतीय कृषि  
अनुसंधान परिषद के फसल  
विज्ञान के उप-महानिदेशक डॉ.  
टी.आर. शर्मा ने की।



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम..... जाति.....

दिनांक ३०.१२.२०२० पृष्ठ संख्या..... कॉलम.....

# एचएयू वैज्ञानिकों ने जई की दो किस्में विकसित की

जगत क्रांति. हिसार

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कृषि वैज्ञानिकों ने जई की एक साथ दो नई व उन्नत किस्मों को विकसित कर विश्वविद्यालय का नाम रोशन किया है। ये किस्में ओएस 405 व ओएम 424 हैं, जिन्हें विश्वविद्यालय के अनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के चाग अनुभाग द्वारा विकसित किया गया है। विश्वविद्यालय द्वारा विकसित इस किस्म को भारत सरकार के कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के कृषि एवं सहकारिता विभाग की 'फसल मानक, अधिसूचना एवं अनुमोदन

कंट्रीय उप-समिति' द्वारा नई दिल्ली में आयोजित बैठक में अधिसूचित व जारी कर दिया गया है। बैठक की अध्यक्षता भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के फसल विज्ञान के उप-महानिदेशक डॉ. टी.आर. शर्मा ने की। जई की इन किस्मों में ओएस 405 को भारत के मध्य क्षेत्र मुख्यतः महाराष्ट्र, गुजरात, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़ और मध्य यू.पी. और ओएस 424 को पहाड़ी क्षेत्र जिसमें हिमाचल, जम्मू-कश्मीर व उत्तराखण्ड के लिए सिफारिश किया गया है। हालांकि इस किस्म को विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने एचएयू में ही विकसित किया है।



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम..... सभास्थानीय पत्र  
दिनांक २१.१२.२०२० पृष्ठ संख्या..... कॉलम.....

## जई की दो किस्में ओएस 405 व ओएस 424 विकसित की

भारत के मध्य व  
पहाड़ी राज्यों के लिए  
की गई सिफारिश

समस्त हरियाणा न्यूज

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कृषि वैज्ञानिकों ने जई को एक साथ दो नई व उत्तम किस्मों को विकसित कर विश्वविद्यालय का नाम रोशन किया है। ये किस्में ओएस 405 व ओएस 424 हैं। जिनके विश्वविद्यालय के अनुबोधिकों एवं पीथ प्रबन्धन विभाग के चारा अनुभाग द्वारा विकसित इस किस्म को भारत सरकार के कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के कृषि एवं सहकारिता विभाग की 'फसल मानक, अधिसूचना एवं अनुसंदेन केंद्रीय उप-समिति' द्वारा नई दियी गयी आयोजित बैठक में अधिसूचित व जारी कर दिया गया है। बैठक को अध्यक्षता भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के फसल विभाग के उप-महानिदेशक डॉ. डॉ. आर. शमा ने की। जई की इन किस्मों ने ओएस 405 को भारत के मध्य क्षेत्र



अब तक जई की 9 किस्में विकसित कर  
चुका है एचएयू : प्रो. समर सिंह

विश्वविद्यालय के कूलपति ग्रोफसर समर सिंह ने कृषि वैज्ञानिकों द्वारा इस उपलब्धि पर बधाई दी और भविष्य में भी निरंतर प्रयासरत रहने का आह्वान किया। उन्होंने बताया कि इससे पहले भी विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा विश्वविद्यालय की स्थापना से लेकर अब तक 9 किस्में विकसित की जा चुकी हैं, जो अपने आप में इस खेत्र में बहुत उपलब्धि हैं।

मुख्यतः महाराष्ट्र, गुजरात, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़ और मध्य यू.पी. और ओएस 424 को पहाड़ी खेत्र विसमें हिमाचल, जम्मू-कश्मीर व उत्तराखण्ड के अन्य किस्मों में अधिक इस लिए सिफारिश किया गया है। हालांकि इस किस्म को विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने एचएयू में ही विकसित किया है।

हेरे चारे की उत्पादकता अन्य किस्मों से 10 प्रतिशत तक अधिक : विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के. सहरावत ने बताया कि इन किस्मों में अन्य किस्मों की तुलना में ग्रोटीन अधिक है, जो पशु के दुध उत्पादन में योग्यताको दर्शाता है। ये किस्में

इन वैज्ञानिकों की मेहनत लाई रंग

विश्वविद्यालय के कृषि महाविद्यालय के अधिकारा एवं अनुबोधिकों एवं पीथ प्रबन्धन विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. ए.के. खबड़ा ने बताया कि ओएस 405 किस्म को विकसित करने में इस विभाग के चारा अनुभाग के वैज्ञानिकों डॉ. डॉ.एस. फोगाट, डॉ. योगेश जिंदल, डॉ. आर.एन. अरोड़ा, डॉ. एस.के. पाहुजा की टीम मेहनत रंग लाई है। इसके अलावा डॉ. एल.के. बिद्या, डॉ. एस.के. योगेश जिंदल, डॉ. आर.एन. अरोड़ा, डॉ. डॉ. एन.के. उक्कराल व डॉ. टीम फोगाट, डॉ. योगेश जिंदल, डॉ. आर.एन. अरोड़ा, डॉ. डॉ. एन.के. उक्कराल व डॉ. टीम फोगाट रंग लाई है। इसके अलावा डॉ. आर.एस. श्योराज, स्वर्णीय डॉ. अनिल गुप्ता व डॉ. यू.एन. जोशी का भी विशेष सहयोग रहा है।

उत्पादन व धोधार की दृष्टि से बहुत ही अधिक है। ओएस 405 किस्म में हेरे चारे किस्म को एचएयू में ही विकसित किया गया है, लेकिन कमटी द्वारा इसकी गुणवत्ता तुलना में 10 प्रतिशत तक अधिक हरा चारा व पैदावार की ज्यान में रखते हुए अभी मिलता है। इसी प्रकार उक्कराल व फोगाट की टीम वैज्ञानिकों की योग्यता की उत्पादन व मुख्य चारों की पैदावार भी 11 प्रतिशत तक अधिक है।

प्रदेश के लिए सिफारिश  
का भेजेंगे प्रपोजल

नई किस्म को विकसित करने वाली टीम महाराष्ट्र आनुबोधिकों एवं पीथ प्रबन्धन विभाग के चारा अनुभाग के अध्यक्ष डॉ. एन.के. उक्कराल व डॉ. योगेश जिंदल एवं पीथ प्रबन्धन के लिए सिफारिश किया गया है। उस किस्म को प्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों में परीक्षण के तौर पर लगाया गया था, जहां इसके बहुत ही सकारात्मक परिणाम सामने आए हैं।



# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

## समाचार पत्र का नाम.

प्राचीन

दिनांक २९.१२.२०२३ पृष्ठ संख्या.....— कॉलम.....—

भारत के मध्य व पहाड़ी राज्यों के लिए की गई सिफारिश

एचएयू वैज्ञानिकों ने एक साथ जई की दो किस्में ओएस 405 व ओएस 424 विकसित की

पांच बड़ो लघुग्र

हिस्पारा औरधी चरण सिंह हरीरामण कपि विश्वविद्यालय के कृषि विभाग ने जब को एक ग्राम दो तो तीव्र व उत्तम किम्बाँ को विश्वविद्यालय के विश्वविद्यालय का नाम देने विषयात् विवादित किया है। ये किम्बाँ अंतर्गत 405 व अंतर्गत 405 हैं। ये किम्बाँ विश्वविद्यालय के अनुसारी नाम हैं। परंपरा प्रदर्शन विधान के जरूर अनुसार द्वारा विकसित किया गया है। विश्वविद्यालय द्वारा विकसित इस किम्बाँ को भारत मरकार के एक ऐसे विश्वविद्यालय मन्त्रालय के कुमुख पर सहकारिता विभाग की 'वस्त्राल मरकार, अभियाचना एवं उत्तरानन्द बृहदीश्वर उप-मरकार' द्वारा नई टिकटों में आपूर्यात्मक रूप से असंगठित या जारी कर दिया गया है। बैठक की अध्यापक विधान के कृष्ण अनुसारीन परिषद् के फलस्त विधान के दूसरा मासिक बैठक, दो. ई.आर. रामों ने कोई नई को इन किम्बाँ में शोषण 405 को भारत के द्वारा ब्रह्म सुखापति: महाराष्ट्र, गुजरात, मध्य प्रदेश, झारखण्ड, उत्तर प्रदेश, उत्तराखण्ड एवं ओडिशा 424 को पालाही बैठक विधायिका विभाग लम्बांगण के विषय परिवर्तित किया गया है। साथसे इन किम्बाँ को विश्वविद्यालय के विभागों ने एकत्र में विश्वविद्यालय के विभागों ने एकत्र में

A close-up photograph showing a dense field of tall, thin grass or reeds. The blades are light-colored and appear slightly silvery or frosty, suggesting a cool environment. The perspective is from a low angle, looking across the expanse of vegetation.

ही विकसित किया है।  
हरे चारों ओर उत्पादकता अन्य किसीमें से 10 प्रतिशत तक अधिक  
विश्वव्यापकाने के अनुसन्धान निदेशक डॉ. एस. के. सदाशिवन ने बताया कि इन किसीमें अब विभिन्नों की सुलभ में प्रोटीन अधिक है, जो पाणी के द्वारा उत्पादन व बढ़ावदारी कीती है। वे कहते हैं कि उत्पादन व पोषण की दृष्टि से बहुत भी बेहतर है। और एस. 405 किसी में हरे चारों व लिंग विवरण के फैट के बीच एक जुड़ाना 10 प्रतिशत तक अधिक हरा चारों में विकसित किया गया है।

है। इसी प्रकार उन्होंने किसी को तुलन में समृद्धि चारों को पैदावार भी 11 प्रतिशत तक अधिकरण किया है। उन्होंने चतारों को इस किस्म के द्वारा 153.94 किलोग्राम तक प्रति हेक्टेएर व रसुवी चारों की उपर 114.73 किलोग्राम तक प्रति हेक्टेएर बढ़ाया है। इनके साथ लगभग 15.39 किलोग्राम तक अधिकरण तक जीव ग्राम किया जा सकता है। ये किस्में पैदा कृत गोंड व गोंड की प्रोटीनिंग वाले हैं। इन प्रत्येक आएम 424 किलोग्राम में हरे चारों की पैदावार 296.5 किलोग्राम प्रति हेक्टेएर व समृद्धि चारों की पैदावार 65.1 किलोग्राम प्रति हेक्टेएर तक

ओंको रहते हैं। ओएस 424 किस्म में लगभग 13.5 किवटल प्रति हेक्टेयर तक यीज प्राप्त किया जा सकता है।

इन वैज्ञानिकों की महत्वता लाउँ रंग  
विश्वविद्यालय के बुधि प्राप्ति विद्यालय ने  
अधिकारी एवं अपार्साइटों द्वारा भी  
प्रबन्धन विभाग के विभागाध्यक्ष व उप-  
द्यक्ष द्वारा ने बताया कि आसो 405 विषय के  
विकास करने में इस विभाग के चाहे  
अनुभवी के वैज्ञानिकों द्वारा हाँसांग द्वारा  
द्योगों के विवाद, डॉ. आसन अध्यक्ष, डॉ.  
एसके. गुहाजी को टीम में नाम द्या जाने के  
इसके अलावा डॉ. एसके. मिश्र, डॉ. एस.  
गोपी व डॉ. सुषम जोशी का भी  
महत्वपूर्ण योग है।

इन्हीं अपार औरेस 424 फिल्म के विवरण संकलन में इस विवाह के चारों दृश्यों का वैज्ञानिक डॉ. डॉमेन पोलग्राम अनुभाग के बैचैनिकों द्वा र डॉमेन पोलग्राम द्वारा विवाहित है। डॉ. आरेस औरेस, एवं एवरेट डर्कलव की दीवानी में इस रूप से इसके अलावा डॉ. आरेस रस्तापा, स्नॉडो और अन्य वैज्ञानिक वैज्ञानिकों द्वा र उन्होंने जीवों की भौतिकीय सम्बन्धों का साझा किया है।

प्रदर्शन के लिए सिफारिश का भेजें ग्रेगोरेजेसन

नई विवाह के विवरण संकलन करने वालों दीवानी स्टटर्स आ-बुर्डिशियों एवं पौष्ट्र प्रजनन विवाहों

के चारा अनुभाग के अध्यवाहक हो गए। एम्-प्रोफेसर ने बताया कि इसलिए इस किस्म को एच्यूएम् वंश से जिक्रियालित किया गया है। उन्होंने द्वारा इसका विवरण व परिवर्तन को अध्याय में रखते हुए अभी जीएस 405 और भारत के सभी उच्च प्रशिक्षण संसाधन, वृत्तालय, विश्व प्रयोगशाला, उत्तराखण्ड और यू.पी.यू. और ओडिशा 424 का यहाँ से होके विस्तृत विवरण व यज्ञ-कार्यक्रम के लिए सिर्फ़ विवरणित किया गया है। इस किस्म को प्रदर्शन के विवरण में दर्शाया गया है कि इसके बहुत ही सकारात्मक परिणाम सापेक्ष हैं। इसके बहुत ही सकारात्मक परिणाम सापेक्ष हैं।

अब तक, जुड़ को ९ किलोमीटर विकल्पित  
कर चुका है एवं ऐसे: पूरा समय सिर्फ  
विकल्पित करने के कुछ दशह्राम अप्रभाव मध्ये  
दिख न करि विज्ञानीकों द्वारा इस उपर्युक्त या  
वर्षायन और पर्यावरण में भी निरसन प्राप्त करने  
का बहुत बड़ा विकल्प बना रहा है। उन्होंने विभिन्न  
इसमें लगभग भी विकल्पित विधि के चारों  
अनुभावों के विज्ञानीकों द्वारा विकल्पित विधि-  
की विश्लेषण से लेकर अब तक ९ किलोमीटर  
विकल्पित कर जा चुकी है, जो अब आप से  
इस छेत्र में बड़ी उपयोगी है।



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....

नं.भा. ३०१२

दिनांक .२९.१२.२०२० पृष्ठ संख्या..... कॉलम.....

### हक्कि ने की जई की दो नई किस्म विकसित



हिसार/29 दिसंबर/रिपोर्टर

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कृषि वैज्ञानिकों ने जई की एक साथ दो नई व उन्नत किस्मों को विकसित कर विश्वविद्यालय का नाम रोशन किया है। ये किस्में ओएस 405 व ओएस 424 हैं, जिन्हें विश्वविद्यालय के अनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के चारा अनुभाग द्वारा विकसित किया गया है। विश्वविद्यालय द्वारा विकसित इस किस्म को भारत सरकार के कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के कृषि एवं सहकारिता विभाग की 'फसल मानक, अधिसूचना एवं अनुमोदन केंद्रीय उप-समिति' द्वारा नई दिल्ली में आयोजित बैठक में अधिसूचित व जारी कर दिया गया है। बैठक की अध्यक्षता भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के फसल विज्ञान के उप-महानिदेशक डॉ. टीआर शर्मा ने की। जई को इन किस्मों में ओएस 405 को भारत के मध्य क्षेत्र मुख्यतः महाराष्ट्र, गुजरात, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़ और मध्य यूपी और ओएस 424 को पहाड़ी क्षेत्र हिमाचल, जम्मू-कश्मीर व उत्तराखण्ड के लिए सिफारिश किया गया है। हालांकि इस किस्म को विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने एचएयू में ही विकसित किया है। विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. एसके सहरावत ने बताया कि इन किस्मों में अन्य किस्मों की तुलना में प्रोटीन अधिक है, जो पशु के दुग्ध उत्पादन में बढ़ावदारी करती है। ये किस्में उत्पादन व पोषण की दृष्टि से बहुत ही बेहतर हैं। ओएस 405 किस्म में हरे चारे के लिए प्रसिद्ध किस्म कैट व ओएस 6 की तुलना में 10

प्रतिशत तक अधिक हरा चारा मिलता है। इसी प्रकार उक्त किस्मों की तुलना में सुखे चारे की पैदावार भी 11 प्रतिशत तक अधिक है। उन्होंने बताया कि इस किस्म में हरे चारे की उपज 513.94 विवर्टल प्रति हेक्टेयर व सुखे चारे की उपज 114.73 विवर्टल प्रति हेक्टेयर मिलती है। इससे लगभग 15.39 विवर्टल प्रति हेक्टेयर तक बीज प्राप्त किया जा सकता है। ये किस्में पत्ता झुलसा रोग के प्रति प्रतिरोधी हैं। इसी प्रकार ओएस 424 किस्म में हरे चारे की पैदावार 296.5 विवर्टल प्रति हेक्टेयर व सुखे चारे की पैदावार 65.1 विवर्टल प्रति हेक्टेयर तक आंकी गई है। ओएस 424 किस्म से लगभग 13.5 विवर्टल प्रति हेक्टेयर तक बीज प्राप्त किया जा सकता है। विश्वविद्यालय के कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता एवं अनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. एके छावड़ा ने बताया कि ओएस 405 किस्म को विकसित करने में इस विभाग के चारा अनुभाग के वैज्ञानिकों डॉ. डीएस फौगाट, डॉ. योगेश जिंदल, डॉ. आरएन अरोड़ा, डॉ. एसके पाहुजा की मेहनत रंग लाई है। इसके अलावा डॉ. एलके मिढ़ा, डॉ. एसके गांधी व डॉ. यूएन जोशी का भी विशेष सहयोग रहा है। इसी प्रकार ओएस 424 किस्म को विकसित करने में इस विभाग के चारा अनुभाग के वैज्ञानिकों डॉ. डीएस फौगाट, डॉ. योगेश जिंदल, डॉ. आरएन अरोड़ा, डॉ. एनके टकराल की टीम की मेहनत रंग लाई है। इसके अलावा डॉ. आरएस श्योराण, स्वर्गीय डॉ. अनिल गुप्ता व डॉ. यूएन जोशी का भी विशेष सहयोग रहा है।



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

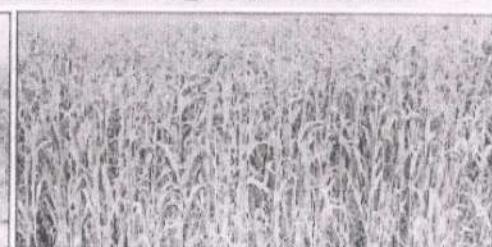
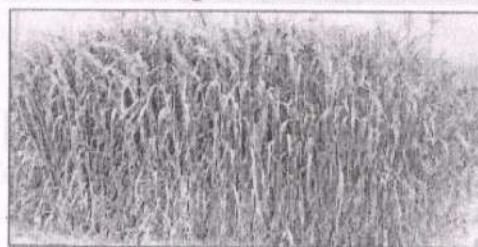
समाचार पत्र का नाम.....डा.जीत सभान्याड

दिनांक ३०.१२.२०२० पृष्ठ संख्या.....कॉलम.....

# एचएयू वैज्ञानिकों ने एक साथ जई की दो किस्में की विकसित भारत के मध्य व पहाड़ी राज्यों के लिए की गई सिफारिश

मंगली नलवा, 29 दिसम्बर  
(देवानन्द सोनी) : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कृषि वैज्ञानिकों ने जई की एक साथ दो नई व उत्तम किस्मों को विकसित कर विश्वविद्यालय का नाम रोशन किया है। ये किस्में ओएस 405 व ओएस 424 हैं, जिन्हें विश्वविद्यालय के अनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के चारा अनुभाग द्वारा विकसित किया गया है।

विश्वविद्यालय द्वारा विकसित इस विस्त को भारत भवकार के कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के कृषि एवं महकार्यालय विभाग की 'फसल मानक, अधिसूचना एवं अनुमोदन कंद्रीय उप-समिति' द्वारा नई दिल्ली में आयोजित बैठक में अधिसूचित व जारी कर दिया गया है। बैठक की अध्यक्षता भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के फसल विज्ञान के उप-महानिदेशक डॉ. टी. आर. शर्मा ने की। जई की इन किस्मों में ओएस 405 को भारत के मध्य त्रिवेणी मुख्यतः महाराष्ट्र, गुजरात, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़ और मध्य प्रदेश के लिए प्रसिद्ध किस्म कैंट व ओएस 6



जई की नई उत्तम किस्मों के फाइल फोटो।

त्रिवेणी जिसमें हिमाचल, जम्मू-कश्मीर व उत्तराखण्ड के लिए सिफारिश किया गया है। त्रिवेणी की इस किस्म को विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने एचएस्यू में ही विकास किया है। हरे चारे की उत्पादकता अन्य किस्मों से 10 प्रतिशत तक अधिक है। वैज्ञानिक सहायता ने बताया कि इन किस्मों में अन्य किस्मों की तुलना में प्रोटीन अधिक है, जो पशु के दुष्प्रभाव में बढ़ोत्तरी करती है। ये किस्में उत्पादन व पोषण की दृष्टि से बहुत ही बेहतर हैं। ओएस 405 किस्म में हरे चारे की पैदावार 296.5 किंटल प्रति हेक्टेयर व सुखे चारे की पैदावार 65.1 किंटल प्रति हेक्टेयर तक आंकी गई है। ओएस 424 किस्म से

की तुलना में 10 प्रतिशत तक अधिक हरा चार मिलता है। इसी प्रकार उत्तम किस्मों की तुलना में सुखे चारे की पैदावार भी 11 प्रतिशत तक अधिक है। उत्तराखण्ड की इस किस्म में हरे चारे की उपज 513.94 किंटल प्रति हेक्टेयर व सुखे चारे की उपज 114.73 किंटल प्रति हेक्टेयर मिलती है। इससे लगभग 15.39 किंटल प्रति हेक्टेयर तक बीज प्राप्त किया जा सकता है। ये किस्में पत्ता झुलसा रोग के प्रति प्रतिरोधी हैं। इसी प्रकार ओएस 424 किस्म में हरे चारे की पैदावार 296.5 किंटल प्रति हेक्टेयर व सुखे चारे की पैदावार 65.1 किंटल प्रति हेक्टेयर तक आंकी गई है। ओएस 424 किस्म से

(छाया : सोनी)

लगभग 13.5 किंटल प्रति हेक्टेयर तक बीज प्राप्त किया जा सकता है।

विश्वविद्यालय के कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता एवं अनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. ए.के. छावड़ा ने बताया कि ओएस 405 किस्म को विकसित करने में इस विभाग के चारा अनुभाग के वैज्ञानिकों डॉ. डी.एस. फोगाट, डॉ. योगेश जिंदल, डॉ. आर.एन. अरोड़ा, डॉ. एम.के. पाहुजा की टीम मेहनत रंग लाई है। इसके अलावा डॉ. एल.के. मिहा, डॉ. एस.के. गांधी व डॉ. यू.एन. जोशी का भी विशेष सहयोग रहा है।



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....

पाठ्य पत्र

दिनांक २९.१२.२०२० पृष्ठ संख्या..... कॉलम.....

## एचएयू वैज्ञानिकों ने एक साथ जई की दो किस्में ओएस 405 व ओएस 424 विकसित की भारत के मध्य व पहाड़ी राज्यों के लिए की गई सिपारिश



जई की उन्नत किस्म विकसित करने वाली टीम सदस्यों के साथ विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह।

### पाठ्यकथ व्यज

हिसार, 29 दिसम्बर : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कृषि वैज्ञानिकों ने जई की एक साथ दो नई व उन्नत किस्मों को विकसित कर विश्वविद्यालय का नाम रोशन किया है। ये किस्में ओएस 405 व ओएस 424 हैं, जिन्हें विश्वविद्यालय के अनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के चारा अनुभाग द्वारा विकसित किया गया है। विश्वविद्यालय द्वारा विकसित इस किस्म को भारत सरकार के कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के कृषि एवं सहकारिता विभाग की 'फसल मानक, अधिकृतना एवं अनुमोदन केंद्रीय उप-समिति' द्वारा नई दिल्ली में आयोजित बैठक

में अधिसूचित व जारी कर दिया गया है। बैठक की अध्यक्षता भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के फसल विज्ञान के उप-महानिदेशक डॉ. टी.आर. शर्मा ने की। जई की इन किस्मों में ओएस 405 को भारत के मध्य क्षेत्र मुख्यतः महाराष्ट्र, गुजरात, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़ और मध्य यू.पी. और ओएस 424 को पहाड़ी क्षेत्र जिसमें हिमाचल, जम्मू-कश्मीर व उत्तराखण्ड के लिए सिफारिश किया गया है। हालांकि इस किस्म को विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने एचएयू में ही विकसित किया है। विश्वविद्यालय के कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता एवं आनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. ए.के. छावड़ा ने बताया

अब तक जई की 9 किस्में विकसित कर चुका है एचएयू : कुलपति प्रोफेसर समर सिंह

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने कृषि वैज्ञानिकों द्वारा इस उपलब्धि पर बधाई दी और भविष्य में भी निरंतर प्रयासरत रहने का आहवान किया। उन्होंने बताया कि इससे पहले भी विश्वविद्यालय के चारा अनुभाग के वैज्ञानिकों द्वारा विश्वविद्यालय की स्थापना से लेकर अब तक 9 किस्में विकसित की जा चुकी हैं, जो अपने आप में इस क्षेत्र में बड़ी उपलब्धि हैं।

कि ओएस 405 किस्म को विकसित करने में इस विभाग के चारा अनुभाग के वैज्ञानिकों डॉ. डी.एम. फोगाट, डॉ. योगेश जिंदल, डॉ. आर.एन. अरोड़ा, डॉ. एन.के. पाहुजा की टीम मेहनत रंग लाई है। इसके अलावा डॉ. ए.ल.के. मिढा, डॉ. ए.स.के. गांधी व डॉ. यू.एन. जोशी का भी विशेष सहयोग रहा है। इसी प्रकार ओएस 424 किस्म को विकसित करने में इस विभाग के चारा अनुभाग के वैज्ञानिकों डॉ. डी.एम. फोगाट, डॉ. योगेश जिंदल, डॉ. आर.एन. अरोड़ा, डॉ. ए.न.के. टुकराल की टीम की मेहनत रंग लाई है। इसके अलावा डॉ. आर.एस. श्योराण, स्वर्गीय डॉ. अनिल गुप्ता व डॉ. यू.एन. जोशी का भी विशेष सहयोग रहा है।





## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

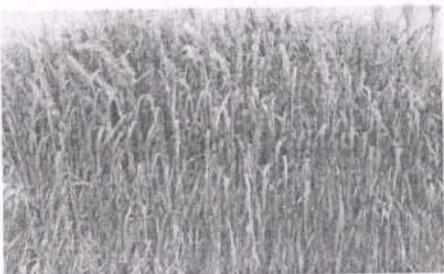
समाचार पत्र का नाम.....सिंही पत्र.....

दिनांक २१.१२.२०२० पृष्ठ संख्या.....कॉलम.....

# हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने एक साथ जई की दो किस्में ओएस-405 व ओएस-424 के विकसन करने की घोषणा की।

भारत के मध्य व पहाड़ी राज्यों के लिए की गई सिफारिश

मिट्टी पत्ता न्यूज, हिसार। वैश्वविद्यालय के युवा वैज्ञानिकों ने नई दो पत्ते प्राप्त करने के लिए विकासन के लिए अनुभाग द्वारा विकसन किया गया है। विश्वविद्यालय द्वारा विकसन इस किस्म की भारत में विकासन के क्षेत्रों पर विकासन करन्वाले विभाग ने एक प्रयोग सामनक, अधिकारीकरण एवं विवरण के द्वारा उन्नीसवीं दश नंद दृष्टिकोण में आवाहित बैठक में प्रस्तुत की गई अनुभाग के लिए एक विवरण किया गया है। वह को इन किस्मों में ओएस-405 को भारत के मध्य खेत मूल्यांकन महाराष्ट्र, मुंबई, मध्य प्रदेश, उत्तीर्णकाल और



हिसार। जई की नई उन्नत किस्मों के फाइल फोटो।



हिसार। जई को उन्नत किस्म विकसन करने वाली टीम सदस्यों के साथ कृतपति प्रीत समर सिंह।

### इन वैज्ञानिकों की महेनत लाई रंग

युवा वैज्ञानिकों की अधिकारा द्वारा आयोजिती एवं योग्य प्राप्तवाद विभाग द्वारा नियमानुसार दो पत्ते के विकासन करने में इन वैज्ञानिकों के प्रयोग के लिए विभागीय वैज्ञानिकों द्वारा अनुमति दी गई है। इन्होंने अनुभाग में एकोटो, विसु, डी. एस.डी. और डी. यू.एफ. जॉर्जी को विशेष लक्षण दिया है। इन्होंने ओएस-424 किस्म को विवरणित करने में इस किस्म के लिए अनुभाग में एकोटो, एसु, विसु, डी. एस.डी. और डी. यू.एफ. जॉर्जी को विशेष लक्षण दिया है। इन्होंने अनुभाग में एकोटो, एसु, विसु, डी. एस.डी. और डी. यू.एफ. जॉर्जी को विशेष लक्षण दिया है।

मध्य दू पी. और ओएस-424 को पहाड़ी उत्तराखण्ड के लिए विवरणित किया गया। विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने एकार्य संघर्ष द्वारा इन किस्मों की विवरणित किया गया। विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने एकार्य संघर्ष द्वारा इन किस्मों की विवरणित किया गया।

### हरे घार की उत्पादकता अन्य किस्मों से 10 प्रतिशत तक अधिक

विश्वविद्यालय के ग्रन्थालय निदेशक डॉ. ई.के. ललकर ने बताया कि ओएस-405 किस्म ने हरे घार के लिए पर्याप्त विकास दें और ओएस-6 यी तुला में 10 प्रतिशत तक अधिक दरा देता है। इसी घार का लिए विकासन की तुला में सुधैर घार की उत्पादकता नी 10 प्रतिशत तक अधिक है। उन्होंने कहा कि इस किस्म में हरे घार की तुला में 15.94 विकासन पूर्ण विकासन दर सुधैर घार की तुला में 14.73 विकासन पूर्ण विकासन है। इससे लगभग 15.39 विकासन पूर्ण विकासन दर की तुला में 14.73 विकासन पूर्ण विकासन है।



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....उत्तम हिंना.....

दिनांक 29.12.2020 पृष्ठ संख्या.....— कॉलम.....—

### हृषि के वैज्ञानिकों ने जई की दो नई किस्में की विकसित

चंडीगढ़/युश्वर नैब, मोहन अरविंद

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कृषि वैज्ञानिकों ने जई की एक माथ तो नह व ऊत किस्में विकसित की है। ये किस्में ओएस 405 व ओएस 424 हैं जिनके विश्वविद्यालय के अनुवाशिकों एवं पौध प्रजनन विभाग के चारा अनुभाग द्वारा विकसित किया गया है। विश्वविद्यालय द्वारा विकसित इस किस्म को भारत सरकार के कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के कृषि एवं सलकारिता विभाग की 'प्राप्त मानक, अधिसूचना' एवं अनुमोदन केंद्रीय उप-समिति द्वारा नई दिक्षिण में आयोजित बैठक में अधिसूचित व जारी कर दिया गया है। बैठक की अध्यक्षता भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के फसल विभाग के उपमहानिदेशक डॉ. टी. आर. शर्मा ने की। जई की इन किस्मों में ओएस 405 को भारत के मध्य क्षेत्र, मुख्यतः महाराष्ट्र, गुजरात, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़ और मध्य यू.पी. और ओएस 424 को पहाड़ी क्षेत्र जिसमें हिमाचल, जम्मू-कश्मीर व उत्तराखण्ड के लिए सिफारिश किया गया है। हालांकि इस किस्म को विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने एचएस में ही विकसित किया है। विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. एस. क. महाराज ने जारी घोषणा कि इन किस्मों में अय किस्मों की तुलना में प्रोटीन अधिक है, जो पूर्ण के दुष्प्र उत्पादन में बढ़ावदी करती है। ये किस्में उत्पादन व पोषण की दृष्टि से बहुत ही बेहतर हैं। ओएस 405 किस्म में होरे चारों के लिए प्रीमिट दिक्षिण की ओएस 6 की तुलना में 10 प्रतिशत तक अधिक हरा चारों मिलती है। उक्त किस्मों की तुलना में सुखे चारों की पैदावार भी 11 प्रतिशत तक अधिक है। इस किस्म में होरे चारों के लिए वेलटर व मुख्य चारों की उपज 513.94 किलोटल प्रति हेक्टेयर व मुख्य चारों की उपज 114.73 किलोटल प्रति हेक्टेयर मिलती है। इसमें लगभग 15.39 किलोटल प्रति हेक्टेयर तक बीज प्राप्त किया जा सकता है। ये किस्में पत्ता झुलसा रोग के प्रति प्रतिरोधी हैं। इसी प्रकार ओएस 424



# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

## लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम..... जागभाव

સ્વાતંત્ર્ય

दिनांक २१.१२.२०२० पृष्ठ संख्या..... — कॉलम..... —

कॉलम

**खोज** भारत के मध्य व पहाड़ी राज्यों के लिए की गई सिफारिश एचएयू वैज्ञानिकों ने जई की दो किसमें ओएस 405 व ओएस 424 विकसित की

ट्रायोल्यूस बीनीफाल

**हिमाचल (जग्याला नदी) :** दक्षिणांचल के कुण्ड विश्वविद्यालय के निर्वाचनिकों ने यहाँ की पहाड़ में नदी का नाम एवं उत्तर किसानों को विश्वविद्यालय के विश्वविद्यालय का नाम रोपण किया है। वर्षावाही से अलग 405 वर्ष अलग 424 है जिसे विश्वविद्यालय के अनुद्योगिकी पर योग प्रबलम विवरण के बाद अनुभाव द्वारा विश्वविद्यालय का नाम दिया गया है।

विश्वविद्यालय द्वारा विकासित इस विद्यामें भारत महाराष्ट्र के वृक्षीय विद्यालय कल्याण मंड़बाब के वृक्षीय एवं महाराष्ट्रिय विभाग को 'फ्रेजर' आमदंड, अधिकारीदार एवं अनुदानदाता कामों उप-मीडियट द्वारा यह विद्यालय में विद्यालय वृक्षीय एवं

卷之三

जारी कर दिया गया है। ये तुक की अवधिकालीन पारसीय कृषि अनुसंधान परिषद के फलस्वरूप विभास के अमरावतीटक ने दी अब शहर ने कही। जहाँ ये इन किसियों में अवधिकालीन 405 को भारत के मध्य सेवा प्रशासन महानगर, गुजरात, बंगलुरु, पुणे, लखनऊ और मध्य प्रदेश और एंडम 424 को पश्चिम सेवा विभास जम्मू-कश्मीर व उत्तराखण्ड के लिए सिपाहियां विद्युत गया है। इसके द्वारा किसी के

विद्युतीय के वैज्ञानिकों ने प्रचारण में ही विकसित किया है।

इस चारों की उत्पादकता अन्य किसिमों से 10 प्रतिशत तक अधिक : विद्युतियानम् के अनुसार निवेशक वह एक के ग्रहणकर्ता ने बताया कि इन किसिमों में अब ये किसिमों की तुलना में प्रोटीन अधिक है, जो पशु के दुध उत्पादन में लाभोंसारी बरती है। ये किसिमें उत्पादन व पोषण की दृष्टि से बहुत ही बेहतर है। और ए 405 किसिम में हाँ चारों के लिए प्रसिद्ध किस्यू कैट 2 और ए 6 की तुलना में 10 प्रतिशत तक अधिक हरा चारा खिलता है।

इसी प्रकार उन लिंगों की नृत्यमा मेरुदंड चारे की प्रतिकार नी । । । प्रतिशत तक अधिक है। उन्होंने

इन वैज्ञानिकों की मेहनत ताई रग

वालया कि इसे नियम 513.941  
के सुधे पारे विस्तृत प्रति देश  
द्वारा संसाधन  
होकर उपलब्ध  
रक्षणा है।

वेद विषयक प्राचीन ग्रन्थों के

प्रति पूर्णतोही है। इसे प्रकार ओडिस  
424 किम्ब में ही जारी की फैक्टरी  
296.5 किलो प्रति हेक्टेक्टर न समीक्षा  
जारी की फैक्टरी 65.1 किलो प्रति  
हेक्टेक्टर तक आवंटी गई है। ओडिस  
424 किम्ब में लगभग 13.5  
किलो प्रति हेक्टेक्टर तक जीत प्राप्त  
किया जा सकता है।



# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....

दीन कृष्णरा

दिनांक ३०.१२.२०२१ पृष्ठ संख्या..... ७ कॉलम..... ७-८

## इम्युनिटी बूस्टर के रूप में काम करता है मशरूम : कुलपति सिंह



कार्यक्रम के दौरान हरपाल सिंह बाजवा को सम्मानित करते मुख्यालिय प्रोफेसर समर सिंह।

हिसार, 29 दिसंबर (सुरेंद्र सोढी) : मशरूम में पाए जाने वाले विशिष्ट औषधीय गुणों एवं स्वास्थ्य के प्रति लाभकारी होने के कारण ही यह इम्युनिटी बूस्टर के रूप में काम करता है। अच्छे पोषक तत्व व औषधीय गुणों की वज्रह से इसके घर-घर उपयोग की आवश्यकता है। उक्त विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय व महाराणा प्रताप बागवानी विश्वविद्यालय, करनाल के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने कहे। वे राष्ट्रीय मशरूम दिवस के अवसर पर आयोजित राज्य स्तरीय कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। कार्यक्रम का आयोजन प्रगतिशील किसान सरदार हरपाल सिंह बाजवा के गांव भौर सैंदेया (कुरुक्षेत्र) में बाजवा मशरूम फार्म की रजत जयंती के अवसर पर किया गया। मुख्यालिय ने कहा कि भारत विविध प्रकार के कृषि जलबायु परिस्थितियों से युक्त कृषि प्रधान देश है। मशरूम के विविधीकरण पर बल देते हुए उन्होंने कहा कि एक सफल मशरूम उत्पादक को मशरूम के बाजारीकरण का ज्ञान होना अति आवश्यक है, जिससे वह अधिक लाभ प्राप्त कर सके। उन्होंने बताया कि वर्षभर में तापमान के अनुसार विधिन प्रकार के मशरूमों को लगाया जा सकता है। उन्होंने बताया कि विश्वविद्यालय ने क्षेत्रीय मशरूम अनुसंधान केन्द्र की स्थापना मुरथल जिला सोनीपत में की है। जल्द ही इसे देश के अग्रणी केन्द्रों के रूप में विकसित किए जाने पर जोर दिया

### ● राष्ट्रीय नशालूम दिवस पर भारत ने नशालूम की खेती की उन्नत तकनीक पुस्तक का विमोचन

के सरदार हरपाल सिंह को इसकी खेती को सफल बनाते हुए देश-विदेश में नाम रोशन करने पर बधाई दी। हरपाल सिंह बाजवा ने मुख्यालिय का स्वागत करते हुए बताया कि वे मशरूम की खेती ही नहीं बल्कि टमाटर की पूयरी, सरसों का साग, मशरूम से बने व्यंजन आचार आदि का प्रसंस्करण कर डिल्वी बटी करके देश व विदेशों में विशेषकर कनाडा में अपने उत्पादों का निर्यात कर रहे हैं। इसके अलावा बेरोजगार नवयुवकों को अपने फार्म पर प्रशिक्षण देते हुए रोजगार भी मुहैया करता रहे हैं। उन्होंने बताया कि अमेरिका व फ्रांस आदि देशों में प्रति व्यक्ति मशरूम की खपत सलाना 4 किलो है जबकि भारत में यह महज 40 ग्राम है। मुख्यालिय ने इस दौरान 'भारत में मशरूम की खेती की उन्नत तकनीक' पुस्तक का विमोचन किया। साथ ही कृषि विज्ञान केन्द्र, कुरुक्षेत्र द्वारा आयोजित प्रशिक्षण के समापन पर उन्होंने प्रतिभागियों को प्रमाणपत्र भी वितरित किए। बागवानी विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. रमेश कुमार गोयल ने मुख्यालिय का स्वागत करते हुए मशरूम दिवस की महत्ता पर प्रकाश डाला। साथ ही बाजवा मशरूम फार्म के मालिक सरदार हरपाल सिंह बाजवा, प्रदेश से आये सभी खुम्ब उत्पादकों, उद्यमियों, किसानों व महिला किसानों



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....  
स्ट्रीनर्स ऐप्प्ली

दिनांक .३०.१२.२०२० पृष्ठ संख्या.....।०.....कॉलम.....।.३.....

**राष्ट्रीय मशरूम दिवस पर भौर सैंदेया में आयोजन**

### इम्युनिटी बूस्ट करता है मशरूम : कुलपति

‘भारत में मशरूम की खेती की उन्नत तकनीक’ पुस्तक का विमोचन

हिसार, 29 दिसंबर (निस)

राष्ट्रीय मशरूम दिवस पर चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय और महाराणा प्रताप बागवानी विश्वविद्यालय, करनाल के कुलपति प्रौ. समर सिंह ने कहा कि मशरूम विशिष्ट औषधीय गुणों के कारण इम्युनिटी बूस्टर के रूप में काम करता है। अच्छे पोषक तत्वों की वजह से इसकी घर-घर उपयोग की आवश्यकता है। कार्यक्रम का आयोजन प्रातिशील किसान सरदार हरपाल सिंह बाजवा के गांव भौर सैंदेया में बाजवा मशरूम फार्म की रजत जयंती के अवसर पर किया गया। प्रौ. समर सिंह ने ‘भारत में मशरूम की खेती की उन्नत तकनीक’ पुस्तक का विमोचन किया। प्रौ. सिंह ने कहा कि भारत विविध प्रकार के कृषि जलवायु परिस्थितियों से युक्त कृषि प्रधान



हिसार में मंगलवार को कार्यक्रम में दौरान हरपाल सिंह बाजवा को सम्मानित करते हुए कुलपति प्रौ. समर सिंह। -निस

देश है। एक सफल मशरूम उत्पादक को मशरूम के बाजारीकरण का ज्ञान होना आवश्यक है। वर्षभर में तापमान के अनुसार विभिन्न प्रकार के मशरूमों को लगाया जा सकता है।

हरपाल सिंह बाजवा ने बताया कि वे मशरूम की खेती ही नहीं बल्कि टमाटर की प्यूरी, सरसों का साग, मशरूम से बने व्यंजन आचार आदि

का प्रसंस्करण कर डिब्बा बंद करके देश व विदेशों में विशेषकर कनाडा में अपने उत्पादों का निर्यात कर रहे हैं। कार्यक्रम में हक्कि के कुलसचिव डॉ. बीआर कब्बोज, चीफ कंजरवेटी ऑफ फारेस्ट डॉ. जगदीश चन्द्र शर्मा, बागवानी महाविद्यालय के डीन डॉ. राजेश भल्ला, सह-निदेशक डॉ. सुनील ढांडा आदि मौजूद रहे।



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....

भौतिक संवेदन

दिनांक .३०.१२.२०२० पृष्ठ संख्या.....४ .....कॉलम.....७-८.....

### फसल को पाले से बचाने के बताए उपाय

**कुरुक्षेत्र,** (जसवीर दुग्गल): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वरिष्ठ कृषि वैज्ञानिक एवं सब्जी विशेषज्ञ डा. सीबी सिंह ने बताया कि मीसम विभाग के अनुसार आगे 4-5 दिनों तक तापमान में काफी गिरावट की सभावना है। ऐसे में रात का तापमान नीचे आने तथा पाला पड़ने की सभावना है। डा. सिंह ने बताया कि जब दिन में सर्द हवा चल रही है और शाम के समय हवा थम जाए तो रात को पाला पड़ने की सभावना बढ़ जाती है। इसमें सबसे अधिक खेत में खड़ी फसल टमाटर, आलू, मटर, बैंगन सबसे अधिक प्रभावित होती है। ऐसी

फसल के बचाव के लिए खेत में हल्की सिंचाई करे। हो सके तो खेत के उत्तर-पश्चिम दिशा में घासफूस जलाकर धुआं करे।



फसल को पाले से बचाने के उपाय बताते सब्जी विशेषज्ञ डा. सीबी सिंह।



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....लोक संपर्क कार्यालय

दिनांक ३०.१२.२०२० पृष्ठ संख्या.....२ कॉलम.....३

### शरीर के इम्युनिटी बूस्टर

के रूप में काम करता

**मशरूम : प्रो. समर सिंह**

हिसार मशरूम में पाए जाने वाले विशिष्ट औषधीय गुणों और स्वास्थ्य के प्रति लाभकारी होने के कारण ही यह इम्युनिटी बूस्टर के रूप में काम करता है। अच्छे पोषक तत्व व औषधीय गुणों की वजह से इसके घर-घर उपयोग की आवश्यकता है। उक्त विचार एचएयू व महाराणा प्रताप बागवानी विश्वविद्यालय करनाल के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने व्यक्त किए। वे राष्ट्रीय मशरूम दिवस के अवसर पर आयोजित राज्यस्तरीय कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। कार्यक्रम का आयोजन प्रगतिशील किसान सरदार हरपाल सिंह बाजवा के गांव भौर सैंदिया(कुरुक्षेत्र) में बाजवा मशरूम फार्म को रजत जयंती के अवसर पर किया गया। कार्यक्रम में एचएयू के कुलसचिव डॉ. बीआर कम्बोज, विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ. अजय सिंह, चीफ कंजरबेटी आफ फारेस्ट, चंडीगढ़ से डॉ. जगदीश चन्द्र शर्मा, बागवानी महाविद्यालय के डीन डॉ. राजेश भल्ला, सह-निदेशक (किसान परामर्श सेवा) डॉ. सुनील ढांडा, प्रधान वैज्ञानिक सेवानिवृत्त डॉ. एस.पी. गोयल और कृषि विज्ञान केंद्र के वरिष्ठ संयोजक डॉ. प्रद्युमन भट्टनागर, डॉ. बलवान सिंह, डॉ. राजवीर गर्ग, डॉ. रमेश वर्मा, डॉ. महासिंह आदि।



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....जनभूमि

दिनांक ३०.१२.२०२० पृष्ठ संख्या.....५ .....कॉलम.....३-५.....

### प्रतिरोधक क्षमता बढ़ता है मशरूम : प्रो. सिंह

हिसार। मशरूम में पाए जाने वाले विशिष्ट औषधीय गुणों एवं स्वास्थ्य के प्रति लाभकारी होने के कारण ही यह प्रतिरोधक क्षमता (इम्यूनिटी बूस्टर) बढ़ाने का काम करता है। अच्छे पोषक तत्व व औषधीय गुणों की वजह से इसके घर-घर उपयोग की आवश्यकता है। यह बात चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार व महाराणा प्रताप बागवानी विश्वविद्यालय करनाल के कुलपति प्रो. समर सिंह ने कही।

वे मंगलवार को राष्ट्रीय मशरूम दिवस के अवसर पर आयोजित राज्य स्तरीय कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। कार्यक्रम का आयोजन प्रगतिशील किसान सरदार हरपाल सिंह बाजवा के गांव भौं सैंदया (कुरुक्षेत्र) में बाजवा मशरूम फार्म की रजत जयंती के अवसर पर किया गया।



हरपाल सिंह बाजवा को सम्मानित करते मुख्यांतिथि प्रो. समर सिंह। अमर उमाला

कुलपति ने कहा कि एक सफल मशरूम उत्पादक को मशरूम के बाजारीकरण का ज्ञान होना अत्यावश्यक है। वर्ष भर में तापमान के अनुसार विभिन्न प्रकार के मशरूमों को लगाया जा सकता है। विश्वविद्यालय ने क्षेत्रीय मशरूम अनुसंधान केंद्र की स्थापना सोनीपत के मुश्कल में की है। जल्द ही इसे देश के अग्रणी केंद्रों के रूप में विकसित किए जाने पर जोर दिया जाएगा। इस अवसर पर मुख्यांतिथि ने 'भारत में मशरूम की खेती की उन्नत तकनीक' पुस्तक का विमोचन भी किया। इस अवसर पर बागवानी विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. रमेश कुमार गोयल, कुलसचिव डॉ. बीआर कंबोज, कुलसचिव डॉ. अजय सिंह, चीफ कंजरवेटी ऑफ फारेस्ट चंडीगढ़ से डॉ. जगदीश चंद्र शर्मा, बागवानी महाविद्यालय के डीन डॉ. राजेश भल्ला, डॉ. सुनील ढांडा, डॉ. एसपी गोयल, कृषि विज्ञान केंद्र के वरिष्ठ संयोजक डॉ. प्रद्युम्न भट्टनागर, डॉ. बलवान सिंह, डॉ. राजवीर गर्ग, डॉ. रमेश वर्मा, डॉ. महसिंह आदि मौजूद थे। व्यूरो



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....

*The Tribune*

दिनांक ३०.१२.२०२० पृष्ठ संख्या..... २ कॉलम..... ३६

# At 0°C, Hisar colder than Shimla

IMD issues two-day orange alert as cold wave intensifies

DEEPENDER DESWAL

TRIBUNE NEWS SERVICE

HISAR, DECEMBER 29

With the mercury dipping to zero degrees Celsius today, Hisar was colder than Shimla where the lowest temperature was recorded at 1.6 degrees Celsius.

The Indian Meteorological Department weather bulletin stated that Hisar's lowest temperature was seven degrees below normal.

Severe cold wave has gripped the region and frost was noticed in the open grounds and agricultural fields in the morning. Farmers say a layer of white blanket was spotted in the fields today morning. Due to severe cold wave, the IMD has issued orange alert in the region for two days.

Farmers said the frost was likely to damage vegetable and mustard crops, but it was not harmful for the wheat crop. Tomato, peas, chilli,



Frost on crops in Hisar on Tuesday. BANSI LAL BASNIWAL

### FROST LIKELY TO DAMAGE CROPS

- Farmers said frost was likely to damage vegetable and mustard crops, but it was not harmful for the wheat crop
- Dr ML Khichar, head, Agriculture Meteorology Department, HAU, said: "Farmers should irrigate the fields during the day to maintain surface temperature and cover the nurseries to protect it from frost."

cauliflower, potato and other seasonal vegetables will suffer damage due to frost.

Subhash Chander, a farmer of Shahpur village near Hisar, said: "Extreme

cold temperature and frost has started damaging vegetables. Even mustard, which is in the grain-formation stage in the region, will be adversely affected."

Dr ML Khichar, head, Agriculture Meteorology Department in the Chaudhary Charan Singh Haryana Agriculture University (HAU), said frost was harmful for vegetables and fruit-laden plants of the rabi crops and nurseries.

"Farmers should irrigate the fields during the day to maintain surface temperature and cover the nurseries with cloth or polythene to protect it from frost," he said.

The weather report of the IMD stated that the maximum temperate of the day was recorded at 18 degrees Celsius yesterday, which is also three degrees below the normal temperature.

The IMD predicted that the minimum temperature was likely to increase gradually next week as weather was likely to be partly cloudy from tomorrow. It predicted possibility of rain or thunderstorm on January 4.



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम..... समस्त हिसारी पृष्ठ संख्या..... कॉलम.....  
दिनांक २५.१२.२०२० पृष्ठ संख्या..... कॉलम.....

### इम्पुनिटी बुस्टर के रूप में काम करता है मशरूम : वीसी

**राष्ट्रीय मशरूम**  
दिवस पर भारत में  
मशरूम की खेती की  
उन्नत तकनीक  
पुस्तक का विमोचन

ममत हरियाणा न्यूज़ हिसार। मशरूम में आए जाने वाले विशेष औपचार्य गुणों पर्व स्वास्थ्य के प्रति लाभकारी होने के कारण ही यह इम्पुनिटी बुस्टर के रूप में काम करता है। अच्छे पोषक तत्व व औपचार्य गुणों की वजह से इसके घर-घर उपयोग की आवश्यकता है। उक्त विनायक चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय व महाराणा प्रताप बागवानी विश्वविद्यालय, करनाल के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने कहे। वे राष्ट्रीय मशरूम दिवस के अवसर पर आयोजित राज्य स्तरीय कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। कार्यक्रम का आयोजन प्रगतिशील किसान समर्दार हरपाल सिंह बाजवा के गांव भौं सैंदेहा(कुरुक्षेत्र) में बाजवा मशरूम फार्म की रजत जयंती के अवसर पर किया गया। मुख्यातिथि ने कहा कि भारत विविध प्रकार के अनुसंधान केन्द्र की स्थापना मुश्तक



#### बेरोजगार को मुहैया करवा रहे हैं रोजगार

हरपाल सिंह बाजवा ने मुख्यातिथि का स्वागत करते हुए बताया कि वे मशरूम की खेती ही नहीं बल्कि टमाटर की पूर्यी, सरसों का साग, मशरूम से बने व्यंजन आचार आदि का प्रसंस्करण कर डिव्ही बंदी करके देश व विदेशों में विशेषकर कनाडा में अपने उत्पादों का नियांत कर रहे हैं। इसके अलावा बेरोजगार नवयुवकों को अपने फार्म पर प्रशिक्षण देते हुए रोजगार भी मुहैया करवा रहे हैं।

कृषि प्रधान देश है। मशरूम के विविधकरण पर चल देते हुए, उन्होंने कहा कि एक सफल मशरूम उत्पादक को मशरूम के बाजारीकरण का ज्ञान होना अति आवश्यक है, जिससे वह अधिक लाभ प्राप्त कर सके। उन्होंने बताया कि वर्षभर में तापमान के अनुसार विभिन्न प्रकार के मशरूमों को लगाया जा सकता है। उन्होंने बताया कि विश्वविद्यालय ने क्षेत्रीय मशरूम कुरुक्षेत्र द्वारा आयोजित प्रशिक्षण के

जिला सोनीपत में की है। जल्द ही इसे देश के अग्रणी केन्द्रों के रूप में विकसित किए जाने पर जोर दिया जाएगा। उन्होंने बाजवा मशरूम फार्म के मरदार हरपाल सिंह को इसकी खेती को सफल बनाते हुए, देश-विदेश में नाम रोशन करने पर बधाई दी। मुख्यातिथि ने इस दौरान 'भारत में मशरूम की खेती की उन्नत तकनीक' पुस्तक का विमोचन किया। साथ ही कृषि विज्ञान केन्द्र, कुरुक्षेत्र द्वारा आयोजित प्रशिक्षण के

ये भी रहे मौजूद कार्यक्रम में हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय ए हिसार के कुलसचिव डॉ. वी. आर. कम्बोज, विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ. अजय सिंह, चीफ कंजरवेटी आफ फारेस्ट, चण्डीगढ़ से डॉ. जगदीश चन्द्र शर्मा, बागवानी महाविद्यालय के डॉन डॉ. राजेश भट्टा, सह-निदेशक (किसान परामर्श सेवा) डॉ. सुनील ढाढ़ा, प्रधान वैज्ञानिक सेवानिवृत डॉ. एस. पी. गोयल, व कृषि विज्ञान केन्द्र के वरिष्ठ संयोजक डॉ. प्रश्नुमन भट्टनागर, डॉ. बलवान सिंह, डॉ. राजवीर गांव, डॉ. रमेश वर्मा, डॉ. महासिंह महित अनेक गणमान्य लोग मौजूद थे।

समापन पर उन्होंने प्रतिभागियों को प्रमाणपत्र भी वितरित किए। बागवानी विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. रमेश कुमार गोयल ने मुख्यातिथि का स्वागत करते हुए मशरूम दिवस की महत्वा पर प्रकाश डाला। साथ ही बाजवा मशरूम फार्म के मालिक मरदार हरपाल सिंह बाजवा, प्रदेश से आये सभी खुम्ब उत्पादकों, उद्यमियों, किसानों व महिला किसानों का भी आभार व्यक्त किया।



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....

द्वितीय। १०२ नं।

दिनांक २०.१.१२.२०२० पृष्ठ संख्या..... — कॉलम.....

# इम्युनिटी बुस्टर के रूप में काम करता है मशरूम : प्रोफेसर समर सिंह

वाटिका@हिसार। मशरूम में पाए जाने वाले विशिष्ट औषधीय गुणों एवं स्वास्थ्य के प्रति लाभकारी होने के कारण ही यह इम्युनिटी बुस्टर के रूप में काम करता है। अच्छे पोषक तत्व व औषधीय गुणों की वजह से इसके घर-घर उपयोग की आवश्यकता है। उक्त विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय व महाराणा प्रताप बागवानी विश्वविद्यालय, करनाल के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने कहे। वे याष्ट्रीय मशरूम दिवस के अवसर पर आयोजित राज्य स्तरीय कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। कार्यक्रम का आयोजन प्रगतिशील किसान सरदार हरपाल सिंह बाजवा के गांव भौंर सैंदवा (कुरुक्षेत्र) में बाजवा मशरूम फार्म की रजत जयंती के अवसर पर किया गया। मुख्यातिथि ने कहा कि भारत विविध प्रकार के कृषि जलवायु परिस्थितियों से युक्त कृषि प्रधान देश है। मशरूम के विविधीकरण पर बल देते हुए उन्होंने कहा कि एक सफल मशरूम उत्पादक को मशरूम के बाजारीकरण का ज्ञान होना अति आवश्यक है, जिससे वह अधिक लाभ प्राप्त कर सके। उन्होंने बताया कि वर्षभर में तापमान के अनुसार विभिन्न प्रकार के मशरूमों को लगाया

**राष्ट्रीय मशरूम दिवस पर भारत में  
मशरूम की खेती की उन्नत तकनीक  
पुस्तक का विमोचन**



जा सकता है। उन्होंने बताया कि विश्वविद्यालय ने क्षेत्रीय मशरूम अनुसंधान केन्द्र की स्थापना मुरथल जिला सोनीपत में की है। जल्द ही इसे देश के अग्रणी केन्द्रों के रूप में विकसित किए जाने पर जोर दिया जाएगा। उन्होंने बाजवा मशरूम फार्म के सरदार हरपाल सिंह को इसकी खेती को सफल बनाते हुए देश-विदेश में नाम रोशन करने पर बधाई दी। हरपाल सिंह बाजवा ने मुख्यातिथि

का स्वागत करते हुए बताया कि वे मशरूम की खेती ही नहीं बल्कि टमाटर की पूर्वी, सरसों का साग, मशरूम से बने व्यंजन आचार आदि का प्रसंस्करण कर डिब्बी बंदी करके देश व विदेशों में विशेषकर कनाडा में अपने उत्पादों का निर्यात कर रहे हैं। इसके अलावा बेरोजगार नवयुवकों को अपने फार्म पर प्रशिक्षण देते हुए रोजगार भी मुहैया करवा रहे हैं। उन्होंने बताया कि अमेरिका व फ्रांस आदि देशों में ०३ मशरूम की खपत सलाना ४ किल ३/८ भारत में यह महज ४० ग्राम है। मु..... ने इस दौरान ह्या भारत में मशरूम की खेती की उन्नत तकनीक हु पुस्तक का विमोचन किया। साथ ही कृषि विज्ञान केन्द्र, कुरुक्षेत्र द्वारा आयोजित प्रशिक्षण के समापन पर उन्होंने प्रतिभागियों को प्रमाणपत्र भी वितरित किए। बागवानी विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. रमेश कुमार गोयल ने मुख्यातिथि का स्वागत करते हुए मशरूम दिवस की महत्ता पर प्रकाश डाला। साथ ही बाजवा मशरूम फार्म के मालिक सरदार हरपाल सिंह बाजवा, प्रदेश से आये सभी खुम्ब उत्पादकों, उद्यमियों, किसानों व महिला किसानों का भी आभार व्यक्त किया।



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....

पांच बजे

दिनांक २१.१२.२०२० पृष्ठ संख्या..... कॉलम.....

# इम्युनिटी बुस्टर के रूप में काम करता है मशरूम : प्रो. समर सिंह

पांच बजे ब्यूग

हिसार। मशरूम में पाए जाने वाले विशिष्ट औषधीय गुणों एवं स्वास्थ्य के प्रति लाभकारी होने के कारण ही यह इम्युनिटी बुस्टर के रूप में काम करता है। अच्छे पोषक तत्व व औषधीय गुणों की वजह से इसके घर-घर उपयोग की आवश्यकता है। उक्त विद्यार्थी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय व महाराणा प्रताप बागबानी विश्वविद्यालय, करनाल के कुलपति प्रोफेसर मरम सिंह ने कहा। वे गोद्वारी मशरूम टिवस के अवसर पर आयोजित राज्य स्तरीय कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे।

कार्यक्रम का आयोजन प्रगतिशील किसान सरदार हरपाल सिंह बाजवा के गांव भौं सैंट्रल (कुरुक्षेत्र) में बाजवा मशरूम फार्म की रजत जयंती के अवसर पर किया गया। मुख्यालिंग ने कहा कि भारत विविध प्रकार के कृषि जलवायु परिस्थितियों से युक्त कृषि प्रधान देश है। मशरूम के विविधीकरण पर बल देते हुए उन्होंने कहा कि एक सफल मशरूम उत्पादक को मशरूम के बाजारीकरण का ज्ञान होना अति आवश्यक है, जिससे वह अधिक लाभ प्राप्त कर सके। उन्होंने बताया कि वर्षभर में तापमान के अनुसार विभिन्न प्रकार के मशरूमों का लगाया जा सकता है। उन्होंने बताया कि विश्वविद्यालय ने क्षेत्रीय मशरूम अनुसंधान केन्द्र की स्थापना मुश्किल जिला सोनीपत में की है। जल्द ही इसे देश के अग्रणी केन्द्रों के रूप में विकसित किए जाने पर जोर दिया जाएगा। उन्होंने बाजवा मशरूम फार्म के सरदार हरपाल सिंह को इसकी



खेती को सफल बनाते हुए देश-विदेश में नाम रोशन करने पर बधाई दी। हरपाल सिंह बाजवा ने मुख्यालिंग का स्वागत करते हुए बताया कि वे मशरूम की खेती ही नहीं बल्कि टमाटर की पूर्यरी, सरसों का साग, मशरूम से बन व्यंजन आचार आदि का प्रसस्करण कर डिल्ली बंदी करके देश व विदेशों में विशेषकर कनाडा में अपने उत्पादों का निर्यात कर रहे हैं। इसके अलावा बेरोजगार नवयुवकों को अपने फार्म पर प्रशिक्षण देते हुए रोजगार भी मुहैया करवा रहे हैं। उन्होंने बताया कि अमेरिका व फ्रांस आदि देशों में प्रति व्यक्ति मशरूम की खपत सलाना 4 किलो है जबकि भारत में यह महज 40 ग्राम है। मुख्यालिंग ने इम दौरान 'भारत में मशरूम की खेती की उत्तम तकनीक' पुस्तक का विमोचन किया। साथ ही कृषि विज्ञान केन्द्र, कुरुक्षेत्र द्वारा आयोजित प्रशिक्षण के समापन पर उन्होंने प्रतिभागियों को प्रमाणपत्र भी वितरित किए। बागबानी विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक

डॉ. रमेश कुमार गोयल ने मुख्यालिंग का स्वागत करते हुए मशरूम विवरण की महत्ता पर प्रकाश डाला। साथ ही बाजवा मशरूम फार्म के मालिक सरदार हरपाल सिंह बाजवा, प्रदेश से आये सभी खुम्ह उत्पादकों, उद्यमियों, किसानों व महिला किसानों का भी आभार बत्त किया।

ये भी रहे मौजूद  
कार्यक्रम में हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार के कुलसचिव डॉ. बी. आर. कम्बोज, विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ. अजय सिंह, चीफ कंजरवेटी आफ फारेस्ट, चण्डीगढ़ से डॉ. जगदीश चन्द्र शर्मा, बागबानी महाविद्यालय के डीन डॉ. राजेश भल्ला, सह-निदेशक (किसान परामर्श सेवा) डॉ. सुनील छांडा, प्रधान वैज्ञानिक सेवानिवृत्त डॉ. एस.पी. गोयल, व कृषि विज्ञान केन्द्र के वरिष्ठ संयोजक डॉ. प्रद्युमन भट्टाचार, डॉ. बलवान सिंह, डॉ. राजवीर गर्ग, डॉ. रमेश वर्मा, डॉ. महासिंह सहित अनेक गणमान्य लोग मौजूद थे।



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम..... द्वीपः भूमि.....  
दिनांक ..३०.१२.२०२०....पृष्ठ संख्या..... १२..... कॉलम..... ५.....

### खेत में हल्की सिंचाई करें : डॉ. सीबी सिंह



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वरिष्ठ कृषि वैज्ञानिक एवं सभ्जी विशेषज्ञ डा. सीबी सिंह ने बताया कि मौसम विभाग के अनुसार अगले चार-पांच दिनों तक तापमान में काफी गिरावट की संभावना है। ऐसे में रात का तापमान नीचे आने तथा पाला पड़ने की संभावना है। डा. सिंह ने बताया कि जब दिन में सर्द हवा चल रही है और शाम के समय हवा थम जाए तो रात को पाला पड़ने की संभावना बढ़ जाती है। इसमें सबसे अधिक खेत में खड़ी फसल टमाटर, आलू, मटर, बैंगन सबसे अधिक प्रभावित होती है। ऐसी फसल के बचाव के लिए खेत में हल्की सिंचाई करें। हो सके तो खेत के उत्तर-पश्चिम दिशा में घासकुंस जलाकर धुआं करें।



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....पंजाबी लोक संपर्क कार्यालय  
दिनांक ३०.१२.२०२२ पृष्ठ संख्या.....३ कॉलम.....२.७

# ‘हिसार में कड़ाके की ठंड, पड़ा पाला’

जम गई ओस की बूंदे, सब्जियों की फसल पर पड़ रहा पाला का असर



टाकन पार्क में छास पर जमी पाला की परत।

(नारंग)

हिसार, 29 दिसम्बर (ब्यूरो): पहाड़ों पर हो रही बर्फबारी और शीत लहरों के कारण हिसार में कड़ाके की ठंड पड़ रही है। रात्रि पास जमाव बिन्दू पर पहुंच गया है, जिसका जनजीवन पर असर पड़ रहा है। शीत लहरों ने लोगों को घरों के अंदर कैद कर दिया है। वहीं पाला पड़ने से खेतों में ओस की बूंदों की परत जम गई।

खेतों में नालियों में पानी जम गया। वहीं ठंड से बचने

संभावना है। इससे बारिश होने की संभावना बनी हुई है।

सुबह से मौसम बदला हुआ था। सर्द हवाओं के चलते दोपहर को भी लोगों को राहत नहीं मिली। शाम ढलते ही शीत लहरों के कारण ठंड का प्रकोप और ज्यादा बढ़ गया।

भारीय मौसम विभाग के अनुसार दोपहर का पारा भी सामान्य से 6 डिग्री सेल्सियस तीव्र 15.0 डिग्री सेल्सियस जाता है। तथा ये पौधों की

### कैसे बनता पाला

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कृषि मौसम विभाग के अध्यक्ष डा. मदनलाल खिंचड़ ने बताया कि सर्द मौसम में जब तापमान हिमोंके आसपास पर या इससे नीचे चला जाता है तब वायु में उपस्थित जलवाया बिना द्रव रूप में परिवर्तित न होकर सीधे ही सूक्ष्म हिमकणों में परिवर्तित हो जाते हैं। इसे ही पाला पड़ना या बर्फ जमाना कहा जाता है।

दोपहर बाट हवा के न चलने तथा रात में आसमान साफ रहने पर

पाला पड़ने की संभावना ज्यादा रहती है। हरियाणा में पाला आमतौर पर दिसम्बर से फरवरी

के महीने में ही पड़ने की संभावना बनी रहती है। पाले के कारण

दिसम्बर माह में रात्रि पारा

वर्ष

पारा

0.2

2019

2018

1.0

2017

3.4

2016

4.4

2015

2.3

2014

1.8

2013

0.8

2012

1.8

2011

0.0

पाले से फसलों से  
ऐसे करे बचाव

पाले का हानिकारक प्रभाव अग्रीती सरसों, आलू, फलों व सब्जियों की नसरी तथा छोटे फलदार पौधों पर पड़ सकता है। इससे बचाव के लिए यदि पानी उपलब्ध हो तो सिंचाई करें, ताकि जमीन का तापमान बढ़ सके। खेत के किनारे पर तथा 15 से 20 फीट की दूरी के अंतराल पर जिस और से हवा आ रही है यात्रि के समय कूड़ा कचरा सूखी चास आदि एकत्रित कर धुआं करना चाहिए, ताकि बातबरण का तापमान बढ़े। सके और पाले का हानिकारक प्रभाव न पड़े। सीमित क्षेत्र में लगी हुई फल व सब्जियों की नसरी को टाट या पालाथिन व भूसे से ढकें।